

समाज के विकास में युवाओं की बदलती सामाजिक दृष्टिकोण का अध्ययन

Abhilasha Chourasia¹, Dr. Urmila Parteti²

^{1,2} Department of Sociology, Mansarovar Global University, Sehore (M.P.), India

सारांश

समाज में युवाओं का सामाजिक दृष्टिकोण तीव्र गति से बदल रहा है, और यह परिवर्तन समाज के विकास की दिशा को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रहा है। तकनीकी प्रगति, वैश्वीकरण, शिक्षा का प्रसार, सोशल मीडिया का प्रभाव, रोजगार के नए अवसर और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति बढ़ती जागरूकता ने युवाओं के विचार और व्यवहार को नई दिशा दी है। पहले जहाँ युवा सामाजिक नियमों, परंपराओं और स्थापित मान्यताओं को बिना प्रश्न किए स्वीकार कर लेते थे, वहीं आज का युवा तर्क, वैज्ञानिक सोच और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के आधार पर समाज की संरचनाओं को समझने और पुनःपरिभाषित करने का प्रयास कर रहा है। युवाओं का यह बदलता दृष्टिकोण सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर अधिक संवेदनशील और सक्रिय भागीदारी का प्रतीक है। इसके परिणामस्वरूप समाज में समावेशिता, पारदर्शिता, परिवर्तन की इच्छा और मानवाधिकारों के प्रति सम्मान जैसे मूल्य सशक्त हो रहे हैं। नई पीढ़ी डिजिटल माध्यमों के जरिए विचारों का आदान-प्रदान अधिक तेजी और व्यापकता से कर रही है, जिससे सामाजिक चेतना का दायरा बढ़ा है।

मुख्यशब्द- समाज का विकास, युवा, सामाजिक दृष्टिकोण, सोशल मीडिया, लोकतांत्रिक मूल्य, सामाजिक नियम, सामाजिक न्याय

प्रस्तावना

समाज के विकास के साथ सामाजिक दृष्टिकोणों और मान्यताओं में बदलाव आना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। आधुनिक युग में, जहाँ विज्ञान और तकनीकी प्रगति ने समाज के हर हिस्से को प्रभावित किया है, वहीं सामाजिक ढांचे और जीवनशैली में भी गहरे परिवर्तन हुए हैं। विशेष रूप से युवा पीढ़ी पर इस बदलाव का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह शोध भारतीय युवाओं के बदलते सामाजिक दृष्टिकोण, विशेष रूप से करियर, परिवार और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति उनके दृष्टिकोण का गहन विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

भारतीय समाज में युवाओं का दृष्टिकोण सदियों से सांस्कृतिक, धार्मिक और पारिवारिक मूल्यों से गहराई से जुड़ा रहा है। पारंपरिक समाज में करियर का उद्देश्य जीवनयापन के लिए साधन मात्र था, जबकि परिवार और सामाजिक जिम्मेदारियाँ सविपरि मानी जाती थीं। समय के साथ, वैश्वीकरण, तकनीकी उन्नति, शहरीकरण और शिक्षा के प्रसार ने युवाओं की सोच और जीवनशैली में महत्वपूर्ण बदलाव लाए हैं। आज, भारतीय युवाओं के लिए करियर केवल आर्थिक स्थिरता का साधन नहीं, बल्कि आत्म-निर्माण और व्यक्तिगत पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है।

भारतीय समाज में पारंपरिक सामाजिक दृष्टिकोण

भारतीय समाज का पारंपरिक ढांचा मुख्य रूप से परिवार और सामुदायिक संबंधों पर आधारित रहा है। युवाओं की पहचान, उनकी जिम्मेदारियों, और उनका सामाजिक स्थान उनके परिवार और समुदाय द्वारा निर्धारित किया जाता था। परिवार की संरचना, विशेषकर संयुक्त परिवार, में युवाओं की भूमिका तय थी। करियर का उद्देश्य केवल परिवार के आर्थिक योगदान में सहायक होना था, जबकि जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों में परिवार का हस्तक्षेप प्रमुख था। सामाजिक जिम्मेदारियाँ, जैसे बुजुर्गों की देखभाल समाज की सेवा, और सामुदायिक कार्यक्रमों में भागीदारी युवाओं की प्राथमिकताओं में शामिल थी। भारत में युवाओं का पारंपरिक दृष्टिकोण मुख्यतः धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों से प्रेरित था, जहां धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष जैसे आदर्श जीवन के विभिन्न आयामों को संतुलित करने की प्रेरणा देते थे। करियर की ओर युवाओं का झुकाव कम था, और पारिवारिक व्यवसाय या पारंपरिक पेशों को अपनाना आम बात थी। समाज की संरचना इस प्रकार की थी कि व्यक्तिगत आकांक्षाएँ सामूहिक हितों के अधीन थीं।

वैश्वीकरण और शहरीकरण के प्रभाव

1990 के दशक में आर्थिक उदारीकरण के बाद से भारत में वैश्वीकरण और शहरीकरण की प्रक्रिया तेज हुई, जिसका प्रभाव युवाओं की सोच और दृष्टिकोण पर व्यापक रूप से देखा गया। नए आर्थिक अवसरों ने युवाओं को परंपरागत दृष्टिकोण से हटकर करियर को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित किया। शिक्षा के नए अवसर, विशेषकर पेशेवर शिक्षा, और विदेशी विचारधाराओं का प्रभाव युवाओं को आत्मनिर्भर और स्वतंत्र बनने की दिशा में प्रेरित करने लगा। शहरीकरण के कारण छोटे शहरों और गांवों से युवाओं का बड़े शहरों की ओर पलायन बढ़ा, जहां उन्हें एक नए तरह के जीवन और सोच का सामना करना पड़ा। यह बदलाव न केवल उनकी करियर संबंधी आकांक्षाओं को प्रभावित करता है, बल्कि परिवार और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति उनके दृष्टिकोण को भी नया रूप देता है। संयुक्त परिवार की जगह अब एकल परिवारों ने ले ली है, और युवाओं की प्राथमिकताएँ व्यक्तिगत विकास और करियर में सफलता पर केंद्रित हो गई हैं।

तकनीकी उन्नति और डिजिटल युग

21वीं सदी में तकनीकी क्रांति और इंटरनेट की पहुंच ने युवाओं के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं। सोशल मीडिया, ई-कॉमर्स, और डिजिटल प्लेटफॉर्म के आगमन ने न केवल उनके रोज़मर्रा के जीवन को बदल दिया है, बल्कि उनकी सोच और दृष्टिकोण पर भी गहरा प्रभाव डाला है। अब युवा अपने करियर के साथ-साथ सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारियों को भी तकनीक के माध्यम से संतुलित करने का प्रयास कर रहे हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया ने युवाओं को वैश्विक स्तर पर जुड़ने, अपनी सोच को साझा करने, और नए विचारों को अपनाने का अवसर प्रदान किया है। इसके साथ ही, इन प्लेटफॉर्मों ने करियर विकल्पों का दायरा भी बढ़ाया है, जिससे पारंपरिक नौकरी के विचार से हटकर युवा स्टार्टअप, फ्रीलांसिंग, और क्रिएटिव इंडस्ट्रीज में अपनी पहचान बना रहे हैं। हालांकि, यह बदलाव उनकी पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों को भी प्रभावित करता है, क्योंकि युवाओं की प्राथमिकताएँ अब तेजी से बदलती हुई डिजिटल दुनिया के साथ जुड़ी हुई हैं।

शिक्षा और पेशेवर आकांक्षाओं में बदलाव

शिक्षा ने हमेशा से सामाजिक दृष्टिकोण को प्रभावित किया है, और भारतीय युवाओं के बदलते दृष्टिकोण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उच्च शिक्षा और पेशेवर शिक्षा के प्रति बढ़ते झुकाव ने युवाओं को नए अवसरों की ओर

आकर्षित किया है। पहले जहां करियर के रूप में सरकारी नौकरी या पारिवारिक व्यवसाय को प्राथमिकता दी जाती थी, अब युवा निजी क्षेत्रों, बहुराष्ट्रीय कंपनियों और उद्यमशीलता की ओर तेजी से आकर्षित हो रहे हैं। इसके साथ ही, शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता ने युवाओं में करियर के प्रति गंभीरता और समाज में अपनी पहचान बनाने की चाह को और अधिक मजबूत किया है। युवा अब केवल परिवार या समाज की अपेक्षाओं के आधार पर करियर नहीं चुन रहे, बल्कि वे अपनी व्यक्तिगत रुचियों और क्षमताओं के आधार पर करियर का चयन कर रहे हैं। यह बदलाव उनके पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति दृष्टिकोण को भी प्रभावित करता है, क्योंकि अब वे अपने निर्णयों में अधिक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर हो रहे हैं।

परिवार के प्रति बदलता दृष्टिकोण

पारंपरिक भारतीय समाज में परिवार एक महत्वपूर्ण इकाई रहा है, जहां बच्चों से उम्मीद की जाती थी कि वे अपने माता-पिता और अन्य बुजुर्गों की देखभाल करेंगे। हालांकि, आधुनिक युवाओं में इस दृष्टिकोण में बदलाव देखा जा रहा है। अब युवा अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता और करियर को प्राथमिकता देते हैं, लेकिन इसके बावजूद वे अपने परिवार से जुड़े रहने और सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने की कोशिश करते हैं। परिवार के प्रति बदलते दृष्टिकोण का एक प्रमुख कारण आधुनिक जीवनशैली और शहरों में बढ़ती व्यस्तता है। शहरी जीवन के दबाव काम की जटिलताएं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रति बढ़ती जागरूकता ने युवाओं को एकल परिवार की ओर झुकाव दिया है। हालांकि, वे अपने माता-पिता और परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझते हैं और उन्हें निभाने के लिए नए तरीके तलाश रहे हैं। जैसे कि वित्तीय सहायता, डिजिटल माध्यमों से संपर्क, और समय-समय पर व्यक्तिगत उपस्थिति।

सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति दृष्टिकोण

भारतीय समाज में सामाजिक जिम्मेदारियों, जैसे बुजुर्गों की देखभाल, सामुदायिक सेवा, और समाज के प्रति दायित्व निभाना, हमेशा से महत्वपूर्ण माने जाते रहे हैं। परंतु आधुनिक युवा इन जिम्मेदारियों के प्रति भी एक नया दृष्टिकोण अपना रहे हैं। अब उनके लिए समाज की सेवा करने का मतलब केवल परंपरागत जिम्मेदारियों को निभाना नहीं रह गया है, बल्कि वे अपने समाज को अधिक व्यापक और व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखने लगे हैं। अब युवा सामुदायिक सेवा, सामाजिक संगठनों से जुड़ने, और जनकल्याण की योजनाओं में सक्रिय भागीदारी के माध्यम से सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने की कोशिश करते हैं। साथ ही, डिजिटल युग ने उन्हें सोशल मीडिया और अन्य प्लेटफॉर्म के माध्यम से सामाजिक मुद्दों पर आवाज उठाने और समाज में परिवर्तन लाने के अवसर भी दिए हैं।

महिला युवाओं के दृष्टिकोण में बदलाव

भारतीय समाज में महिला युवाओं के दृष्टिकोण में भी व्यापक बदलाव आए हैं। अब महिलाएँ करियर, शिक्षा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रति अधिक जागरूक हो रही हैं। पहले जहां महिलाएँ मुख्य रूप से पारिवारिक जिम्मेदारियों तक सीमित रहती थीं, अब वे हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। करियर और व्यक्तिगत विकास के प्रति बढ़ती जागरूकता ने महिलाओं के पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति दृष्टिकोण को भी प्रभावित किया है। महिलाएँ अब अपने जीवन के हर क्षेत्र में संतुलन बनाने की कोशिश कर रही हैं, चाहे वह करियर हो या पारिवारिक जिम्मेदारियाँ। वे अपने परिवार और समाज की अपेक्षाओं के साथ-साथ अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों को भी पूरा करने के लिए प्रयासरत हैं।

सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति दृष्टिकोण

सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति भारतीय युवाओं का दृष्टिकोण तेजी से बदल रहा है। जहां पहले सामाजिक जिम्मेदारियों को अक्सर एक परंपरा या नैतिक कर्तव्य के रूप में देखा जाता था, वहीं आज की युवा पीढ़ी इसे अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानती है और सक्रिय रूप से सामाजिक मुद्दों में भाग ले रही है। पर्यावरण संरक्षण, मानवाधिकार, और सामुदायिक सेवा जैसे मुद्दों में उनकी बढ़ती रुचि और स्वैच्छिक कार्यों व सामाजिक उद्यमिता में उनकी भागीदारी इस बदलाव को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

पर्यावरण संरक्षण: आज के युवा पर्यावरण संरक्षण के महत्व को गहराई से समझते हैं। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और जैव विविधता के नुकसान जैसे मुद्दों पर उनकी जागरूकता और सक्रिय भागीदारी बढ़ी है। वे न केवल पर्यावरणीय अभियानों में भाग लेते हैं, बल्कि अपने दैनिक जीवन में भी पर्यावरणीय रूप से जागरूक विकल्प चुनते हैं, जैसे कि प्लास्टिक का उपयोग कम करना, सस्टेनेबल फैशन को अपनाना, और ऊर्जा की बचत करना।

मानवाधिकार: मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता और सम्मान में भी युवाओं का योगदान उल्लेखनीय है। चाहे वह लैंगिक समानता, जातिगत भेदभाव, या एलजीबीटीक्यूएड अधिकारों का मामला हो, भारतीय युवा इन मुद्दों पर सक्रिय रूप से आवाज उठा रहे हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने उन्हें एक व्यापक मंच दिया है, जहां वे अन्याय और भेदभाव के खिलाफ अपनी बात रख सकते हैं और जागरूकता फैला सकते हैं।

सामुदायिक सेवा: सामुदायिक सेवा के प्रति युवाओं की प्रतिबद्धता में भी वृद्धि हुई है। वे स्वच्छता अभियान, शिक्षा के प्रसार, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार और ग्रामीण विकास जैसे कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं। ये कार्य न केवल समाज के लिए फायदेमंद हैं, बल्कि युवाओं को समाज के विभिन्न वर्गों के साथ घुलने-मिलने और उनके मुद्दों को समझने का अवसर भी देते हैं।

स्वैच्छिक कार्य: स्वैच्छिक कार्यों में युवाओं की भागीदारी न केवल उनके सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति समर्पण को दर्शाती है, बल्कि उनके नेतृत्व कौशल और आत्म-संतुष्टि को भी बढ़ाती है। वे एन.जी.ओ, सामुदायिक समूहों, और विभिन्न सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं, और उनके प्रयासों का प्रभाव समाज के विभिन्न स्तरों पर देखा जा सकता है।

सामाजिक उद्यमिता: सामाजिक उद्यमिता में बढ़ती रुचि एक और महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है। युवा अब सिर्फ लाभ के लिए व्यवसाय करने के बजाय, समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए उद्यमिता को एक माध्यम के रूप में देख रहे हैं। वे ऐसे व्यवसाय मॉडल्स तैयार कर रहे हैं, जो समाज के वंचित वर्गों को सशक्त बनाते हैं, पर्यावरणीय स्थिरता को प्रोत्साहित करते हैं, और सामुदायिक विकास में योगदान करते हैं। उदाहरण के लिए, ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन, सस्टेनेबल उत्पादों का निर्माण, और सामाजिक शिक्षा के प्रसार के लिए स्थापित किए गए स्टार्टअप्स।

शैक्षिक और सामाजिक संदर्भ

शैक्षिक और सामाजिक संदर्भों में भारतीय युवाओं का अनुभव तेजी से बदल रहा है। शिक्षा प्रणाली, जो कि समाज का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, ने उनके सोचने-समझने के तरीकों और सामाजिक मान्यताओं को गहराई से प्रभावित किया है। इसके साथ ही, सामाजिक और सांस्कृतिक बदलावों ने उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को भी प्रभावित किया है। इस संदर्भ में, शिक्षा प्रणाली का प्रभाव और सामाजिक-सांस्कृतिक बदलावों का युवाओं पर प्रभाव अध्ययन का एक महत्वपूर्ण विषय है।

शिक्षा की भूमिका: शिक्षा प्रणाली ने युवाओं की मानसिकता और सोचने के तरीकों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जहां पहले शिक्षा का मुख्य उद्देश्य नौकरियों के लिए योग्य बनाना था। वहीं अब यह सामाजिक, सांस्कृतिक, और व्यक्तिगत विकास का भी एक माध्यम बन गया है। शिक्षा ने न केवल रोजगार के अवसरों को बढ़ाया है। बल्कि युवाओं को समाज में सक्रिय रूप से भाग लेने और अपनी जिम्मेदारियों को समझने के लिए भी प्रेरित किया है।

शिक्षा प्रणाली में सुधार: वर्तमान में, भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार की जरूरत को व्यापक रूप से महसूस किया जा रहा है। छात्रों को सृजनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, और समस्या समाधान कौशल पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। पारंपरिक रटने वाली शिक्षा पद्धति की जगह अब व्यावहारिक और अनुभवजन्य शिक्षण विधियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

तकनीकी शिक्षा और डिजिटल शिक्षा: डिजिटल शिक्षा का प्रसार, विशेषकर कोविड-19 महामारी के बाद, ने छात्रों को शिक्षा के नए तरीकों से जोड़ा है। ऑनलाइन कोर्स, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म्स और वर्चुअल क्लासरूम ने शिक्षा को अधिक सुलभ और लचीला बनाया है। इससे छात्रों में आत्म-शिक्षण और आत्मनिर्भरता की भावना का विकास हुआ है।

सांस्कृतिक बदलाव: वैश्वीकरण और आधुनिकता के प्रभाव ने भारतीय समाज में सांस्कृतिक बदलावों को प्रेरित किया है। परंपरागत सांस्कृतिक मान्यताओं और आधुनिक विचारधाराओं के बीच एक संतुलन बनाने की चुनौती युवा पीढ़ी के सामने है। वे अब अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए वैश्विक दृष्टिकोण अपनाने की कोशिश कर रहे हैं।

लिंग समानता और अधिकार: समाज में लिंग समानता की ओर बढ़ते कदम ने युवाओं के अनुभवों को प्रभावित किया है। महिला शिक्षा, महिलाओं की कार्यस्थल पर सहभागिता, और एलजीबीटीक्यूए समुदाय के अधिकारों के प्रति संवेदनशीलता जैसे मुद्दे अब मुख्यधारा में आ रहे हैं। युवा पीढ़ी इन बदलावों को स्वीकार कर रही है और अपने जीवन में इन्हें अपनाने की कोशिश कर रही है।

परिवार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता: पारंपरिक पारिवारिक संरचनाओं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच संतुलन बनाना भी युवाओं के अनुभवों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। वे अब परिवार की अपेक्षाओं और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं के बीच संतुलन बनाने का प्रयास कर रहे हैं। विवाह, संतान पालन, और करियर के प्रति उनके दृष्टिकोण में लचीलापन और स्वतंत्रता की भावना बढ़ रही है।

सामाजिक मीडिया और संचार: सोशल मीडिया और डिजिटल संचार ने युवाओं के सामाजिक अनुभवों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। ये प्लेटफॉर्म न केवल उनकी सोच और दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं, बल्कि उन्हें समाज के विभिन्न मुद्दों पर सक्रिय रूप से जुड़ने का अवसर भी देते हैं। यहां तक कि सामुदायिक सेवा और सामाजिक आंदोलनों में उनकी भागीदारी भी इन प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से बढ़ी है।

नए सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूकता: पर्यावरण संरक्षण, मानवाधिकार, और सामुदायिक सेवा जैसे सामाजिक मुद्दों के प्रति युवाओं में जागरूकता बढ़ी है। वे न केवल इन मुद्दों पर जागरूक हैं, बल्कि उनके समाधान के लिए सक्रिय रूप से प्रयास भी कर रहे हैं। यह जागरूकता शिक्षा प्रणाली और सामाजिक बदलावों के प्रभाव का ही परिणाम है।

भारतीय युवाओं का शैक्षिक और सामाजिक अनुभव आज के समय में परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। शिक्षा प्रणाली के सुधार, डिजिटल शिक्षा का उदय, और सामाजिक-सांस्कृतिक बदलावों के प्रभाव ने उनकी सोच, दृष्टिकोण, और जीवन शैली

को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। ये अनुभव न केवल उनके व्यक्तिगत विकास में सहायक है, बल्कि समाज के लिए भी सकारात्मक बदलाव की दिशा में कदम उठाने के लिए प्रेरित करते हैं।

निष्कर्ष

समाज के विकास में युवाओं की बदलती सामाजिक दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका निभा रहा है। यह दृष्टिकोण केवल व्यक्तिगत परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक संरचना, राजनीतिक चेतना, आर्थिक परिवर्तन और सांस्कृतिक संतुलन को भी प्रभावित कर रहा है। आज के युवा उन मुद्दों के प्रति अधिक संवेदनशील हैं, जो सीधे समाज के स्वास्थ्य और विकास से जुड़े हैं—जैसे समानता, पर्यावरण, मानवाधिकार, शिक्षा और रोजगार। वे परंपरागत रूढ़ियों को चुनौती देकर समाज को बेहतर, अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी बनाने की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। यह परिवर्तन युवा शक्ति की वास्तविक पहचान को दर्शाता है, क्योंकि वे न केवल नए विचारों को अपनाते हैं, बल्कि उन्हें व्यवहार में भी लागू करने की क्षमता रखते हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म ने उनके विचारों को गति दी है, जिसके कारण सामाजिक जागरूकता और भागीदारी के नए रूप सामने आए हैं। वे अब समस्याओं पर केवल असहमति जताने वाले नहीं, बल्कि समाधान खोजने वाले सक्रिय नागरिक बनते जा रहे हैं। हालाँकि, बदलती सामाजिक दृष्टि के साथ कुछ चुनौतियाँ भी उभरती हैं। सामाजिक मूल्यों का क्षरण, संबंधों में दूरी, सांस्कृतिक संघर्ष, और सोशल मीडिया आधारित तुलनाओं से उत्पन्न तनाव जैसी समस्याएँ युवा जीवन को प्रभावित करती हैं। इसके बावजूद, यदि समाज और परिवार युवाओं को सही दिशा, मार्गदर्शन और अवसर प्रदान करें, तो यह बदलती सोच समाज के लिए एक सुदृढ़ नींव सिद्ध हो सकती है। युवाओं की बदलती सामाजिक दृष्टि समाज को गतिशील, प्रगतिशील और अधिक मानवीय बनाने की क्षमता रखती है। उनका दृष्टिकोण आधुनिकता और मूल्यों के संतुलन पर आधारित है, जो समाज के विकास को नई ऊर्जा प्रदान करता है। आने वाले समय में यही युवा अपनी नवाचार-शक्ति, संवेदनशीलता और नेतृत्व क्षमता के आधार पर समाज को नई दिशा देंगे, और इस प्रकार उनके बदलते सामाजिक दृष्टिकोण को समाज के विकास की धुरी कहना बिल्कुल उचित होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह, एस. (2021), युवाओं की बदलती मानसिकता और समाज में उनका योगदान अमृतसर: पायस प्रकाशन. 1(1), 1112-1121.
2. यादव, ए. (2017). भारतीय युवाओं की नई सोच: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, पटना: बिहार साहित्य अकादमी. 11(13), 10-19.
3. मौर्य, जे. (2020). लैंगिक समानता और भारतीय युवाओं का दृष्टिकोण, कोच्चि: केरल विश्वविद्यालय प्रकाशन. 2(11), 101-109.
4. शर्मा, एन. (2022) युवाओं की सामाजिक भागीदारी और पर्यावरण संरक्षण, चंडीगढ़रू पंजाब साहित्य निकेतन. 3(11), 103-122.
5. वर्मा, पी (2019), भारतीय समाज में युवाओं की भूमिका और उनकी सामाजिक जिम्मेदारियाँ, कानपुर: साहित्य संगम. 5(6), 19-29.
6. चौधरी, एस. (2018), युवाओं के सामाजिक दृष्टिकोण का समाज पर प्रभाव आगरा: साहित्य सृजन. 4(4), 12-22.

7. कपूर, डी. (2020), आधुनिकता और भारतीय युवा: सोच में परिवर्तन, नई दिल्ली: यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन. 24(1), 1-9.
8. राज. ए. (2021). युवा और सामाजिक न्याय: भारतीय संदर्भ में अध्ययन, जयपुररू राजस्थानी प्रकाशन. 12(12), 555-569.
9. मेहता, आर. (2019), परिवार, करियर और युवा: एक त्रिकोणीय दृष्टिकोण, मुंबईरू पेंगुइन प्रकाशन, 1(10), 435-444.
10. शुक्ला, ए (2020). भारतीय युवाओं की नई प्राथमिकताएं सामाजिक और सांस्कृतिक विश्लेषण, दिल्ली: युवा समाज प्रकाशन, 4(14), 138-148.
11. क्रिजगर, ऐनी और शिफोफ-गोडार्ट, लीके और लैटिंग, कैरेन और एल्टग्रेस्ट, लिसेट और रात, हेन और जोस्टेन, कोएन। (2024)। समुदाय में छोटे बच्चों के लिए एक जीवनशैली जांच उपकरणरू माता-पिता और युवा स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों की ज़रूरतें और इच्छाएँ। बीएमसी स्वास्थ्य सेवा अनुसंधान। 24(1), 1-9.
12. शतालोव, सर्गेई (2024)। युवाओं के पालन-पोषण में पारिवारिक जीवनशैली बनाने का महत्व। सारातोव ऑर्थोडॉक्स थियोलॉजिकल सेमिनरी की कार्यवाही। 2(5), 52-65।
13. बोरगर, ओफिर और सेगेव-बेकर, अनात और पर्ल, लियाट और साइमन, आसफ और याकोबोविच-गवन, मिशल और शेप्स, तामार और ब्रेनर, अविविट और ओरेन, आसफ और लेबेन्थल, येल। (2024)। इज़राइल में उपचार-अनुभवी लिंग-विविध युवाओं में शारीरिक संरचना, उपापचयी सिंड्रोम और जीवनशैली। बाल चिकित्सा मोटापा। 19(10), 1-11।
14. सोकोलोवा, एम.पी. (2024). युवाओं के स्वास्थ्य पर जीवनशैली और पर्यावरणीय आदतों का प्रभाव (साहित्य समीक्षा). पर्यावरण और स्वास्थ्य. 2(4), 72-80.